बेहद का वैराग्य - 04

अव्यक्त बापदादा :-

➳_➳ **अब जितना ही, बेहद के विशाल स्वरुप की सर्विस तीव्र रूप से करते जा रहे हो इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में अल्पकाल के लिए होगी।** तो अपने सुख से वैराग्य उत्पन्न करेगी। तब ही वैराग्य के बाद समाप्ति होगी।

➳_➳ अपने आप से पूछो कि क्या हमारे अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति रहती है? जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। **सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।**

➳_➳ अब अपने कार्य को समेटना शुरु करो। **जब अभी से समेटना शुरु करेंगे तब ही जल्दी सम्पन्न कर सकेंगे। समेटने में भी टाइम लगता है।**

(03.02.1974)

➢ कर्मातीत की परिभाषा

➳_➳ **सब कुछ करते हुए भी अकर्ता / उपराम**

→ कोई भी **सर्विस में भी लगाव न हो**

■ केवल **निमित भाव से सर्विस की जाय**

▶ **इससे ही कर्मात्तीत बन जायेंगे**

➢ समेटना

➳_➳ अब अपने कार्य को समेटना शुरु करना है

→ सोचा की आज से समेटना है और समेट लिया

■ ऐसा नहीं हो सकेगा

➳_➳ विस्तार को समेटना कैसे है ?

→ **<u>पुराने हिसाब किताब को समेटना है</u>**

■ नये हिसाब किताब क्रिएट नहीं करना है

▶ जो है वह बहुत है

→ **<u>नये सम्बन्ध क्रिएट नहीं करना है</u>**

■ उसमे फसना नहीं है

▶ अब सब कुछ समेटते जाना है

→ **<u>संकल्प को समेटना है</u>**

■ बुध्धि जो भटक रही है

▶ बुध्धि का जो विस्तार हो गया है

▶ संकल्प जो इधर उधर जा रहे है उसे समेटना है

→ **व्यक्ति और वस्तु के लगाव को समेटना है**

■ बहुत सारा जो लगाव है

▶ उसे कम करना है

→ **इरछाओ को समेटना है**

■ इरछाओ को थोडा कम कर देना है

→ **बोल के विस्तार को समेटना है**

→ **द्रष्टि को समेटना है**

■ द्रष्टि को भटकने की बहुत आदत है

▶ यहां देखो, वहा देखो, ये भी देखो, वो भी देखो

→ **कान को समेटना है**

■ कान को संसार के समाचार सुनने की बहुत रूचि रहती है

▶ की किसके साथ क्या हो रहा है

▶ उस डिपार्टमेंट में क्या हो रहा है

→ **पैरो को समेटना है**

■ पैरो को भटकने की आदत है

▶ यह वहा जाने की इरछा होती रहती है

→ **भावनाओ को समेटना है**

■ भावनाओ को बहने की आदत है

▶ वो बह के न चली जाय उसका ख्याल रखना है

➳_ ➳ जब समेटना शुरु करते है तो क्या किया जाय? उसकी विधि क्या है ?

→ कम कम करते जाना है

■ और विस्तार नहीं करना है

▶ बिनजरुरी कहा कहा विस्तार हुआ है, वो चेक करो

अव्यक्त बापदादा :-

➳_ ➳ सदैव बेहद के वैराग्यवृत्ति वाले। बेहद के त्यागी, बेहद के सेवाधारी और बेहद के वैरागी। इन तीनों स्टेजिस से पार करने वाले ही विश्व-महाराजन् बन सकते हैं।

➳_ ➳ साथ ही अन्त में लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं। अपने आपको चेक करो कि तीनों स्टेजिस में से कौन-सी स्टेज तक पहुँचे हैं?

➳_ ➳ स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं,स्वयं का जज बनता है वही धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है। (27.09.1975)

➢➢ बेहद की परिभाषा

➳_ ➳ UNLIMITED

➳_ ➳ LIMITLESS

➳_ ➳ जिसकी कोई सीमा नहीं

➳_ ➳ जिसका कोई छोर नहीं

➳_ ➳ अपरीनित

➳_ ➳ विशाल

➳_ ➳ बहुत बड़ा

➳_ ➳ सार भौमिक

➳_ ➳ UNIVERSAL

➳_ ➳ सिमित

➳_ ➳ त्यागी

➳_ ➳ वैरागी

➢➢ MEANING OF UNINTERESTED, DISINTERESTE, CAREFREE

➳_ ➳ जो हमे पसंद नहीं है उसे कहां जाता है **UNINTERESTED**

➳_ ➳ **DISINTERESTE अर्थात IMPARTIAL**

→ बिना कोई पक्षपात के निर्णय करना

➳_ ➳ **EXAMPLE**

→ जो JUDGE होता है वो,

- DISINTERESTE होता है
  - ▶ अपने केस में

→ जो स्टूडेंट होता है,

- वह UNINTERESTED होते है
  - ▶ अपनी पढाई में

➳_ ➳ **बाबा हमे CARELESS नहीं CAREFREE बनाना चाहते है**

→ CAREFREE माना बेफिक्र, निश्चिंत

- तुम्हारी निश्चिंत अवस्था माना बेफिक्र बादशाह

➢➢ विश्व महाराजन

➳_ ➳ विश्व महाराजन अर्थात **सारे शक्तियों के स्टॉक से भरपूर रहेंगे**

➳_ ➳ विश्व महाराजन अर्थात **तन, मन, धन, श्वास और समय सभी विश्व कल्याण के लिये होगा**

➳_ ➳ अपने विग्न और समस्या का हल करना यह तो कॉमन बात है, परन्तु जो विश्व महाराजन बनने वाले होते है **उनका हर संकल्प, हर समय दुसरो के विग्न समाप्त करने के लिये होगा**

➳_ ➳ विश्व महाराजन की पदवी प्राप्त करने वाले का **सब कुछ दुसरो के प्रति होगा, खुद के लिये नहीं होगा**

➳_ ➳ **त्याग, वैराग्य और सेवा साथ में होगा तो ही विश्व महाराजन बन सकेंगे**

→ अपने अप को चेक करना है की,

- क्या मैंने सम्पूर्ण त्याग किया हुआ है ?
- क्या मैंने सम्पूर्ण वैराग्य किया हुआ है ?
- क्या मैं सम्पूर्ण सेवाधारी हु ?
  - स्वयं ही स्वयं का JUDGE बनना है
  - कचेरी लगानी है
  - चार्ट लिखना है
  - रजिस्टर रख के रोज की चेकिंग करनी है

अव्यक्त बापदादा :-

➳_ ➳ आज बाप-दादा कौन-सी सभा देख रहे हैं? यह है राज ऋषियों की सभा। अपने को सदा राज ऋषि समझते हुए चलते हो? **एक तरफ राज्य, दूसरी तरफ ऋषि। दोनों के लक्षण अलग-अलग हैं। वह है भाग्य, वह है त्याग। वह है सर्वअधिकारी और वह फिर ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी।**

➳_ ➳ **सर्व अधिकारी और बेहद के वैरागी। वह सर्व का प्यारा और वह सबसे न्यारा। दोनों ही लक्षण, बोल और कर्म में सदा साथ-साथ दिखाई देते हैं। वर्तमान स्वराज्य अर्थात् स्व का इन सर्व-कर्मइन्द्रियों पर राज्य - इसको कहते हैं स्वराज्य और वही है भविष्य का डबल राज्य अधिकारी।**

➳_ ➳ डबल राज्य का नशा सदा रहता है? जितना राज्य का नशा उतना ही बेहद का वैराग अर्थात् ऋषि रूप सदा स्मृति में रहता है? **इस पुरानी देह और देह की दुनिया से बेहद के वैरागी बन गये हो? वा अभी भी यह पुरानी देह और दुनिया अपनी तरफ आकर्षित करती है? यह कब्रिस्तान अनुभव होता है? सभी मूर्छित हुई आत्मायें नजर आती हैं या सिर्फ कहने मात्र हैं?**

➳_ ➳ **ये सब मरे पड़े हैं अर्थात् कब्रिस्तान है, जब तक वह अनुभव न होगा तो बेहद के वैरागी नहीं बन सकेंगे। तो जब तक यह दुनिया श्मशान है, ऐसा अनुभव नहीं होगा तो सदाकाल का बेहद का वैराग्य - यह अनुभव कैसे होगा? (07.10.1975)**

➢➢ **न्यारापन**

➳_ ➳ **सबसे ज्यादा प्यारा वही बन सकता है**

→ **जो सबसे न्यारा है**

- प्यारा बनने की फर्स्ट स्टेज है
  - न्यारापन

- ▶ त्याग
- ▶ वैराग्य
- ▶ उपराम
- ▶ अकर्ता
- ▶ DETACHMENT
- ▶ सबसे अलग कोई लेना देना नहीं

➢➢ धर्म की परिभाषा

➳_ ➳ **“RELIGION IS REALIZATION” (धर्म अर्थात अनुभूति)**

→ धार्मिक उसे कहा जायेगा जिसे **परमात्म प्रेम का अनुभव हुआ है**

→ धार्मिक उसे कहा जायेगा जिसे संसार की असारता का अनुभव हो

- ■ धर्म से इसका कोई लेना देना नहीं की
  - ▶ आपने कीतनी किताबे पढ़ी है
  - ▶ कितने शाश्त्र पढ़े है
  - ▶ कहा कहा तीर्थ यात्राये की है
  - ▶ कितने दान पुन्य किये है
  - ▶ कितने निष्काम कर्म किये
- ■ इन सब का धर्म से कोई संबंध ही नहीं है

➢➢ अपने मन से क्या बाते रोज करनी है ?

➳_ ➳ अपने मन से बाते करनी है की,

→ अरे मुर्ख मन, कहा भटक रहे हो ?

→ अभी तुमको क्या चाहिये ?

→ तुम किसको देख रहे हो ?

→ अभी तक कहा आकर्षित हो रहे हो ?

→ तुम यहाँ आय किस लिये थे ?

→ यहाँ वहा फसने आय थे?

- ■ की तपस्या करने आय थे ?

→ किससे प्यार कर रहे हो ?

- ■ तुम यहा देहधारियो को प्यार करने आय थे ?
  - ▶ या बाप से प्यार करने आय थे ?

→ स्वयं को दूसरी दूसरी चीजो में फसाने आय थे ?

- ■ की तपस्या से स्वयं को शक्तिशाली बनाने आय थे ?

➳_ ➳ ऐसे अपने मन से, स्वयं से, बाप से बाते करना है

→ इन तीन चीजो का रोज विचार सागर मंथन अवश्य करना ही है

- यह हमारी रोज की नित्य दिनचर्या का भाग बना लेना है

➢➢ इरछा से मुक्त

➳_ ➳ अगर हम इरछाओ से मुक्त हो जाय तो हमे अष्ट सिध्धिया & नव निधियाँ मिल जायेगी

→ उस समय फिर कोई आशा अभिलाषा बाकी नहीं रहेगी

- **दुसरो को बहुत खुश कर लिया है**
  - **अब स्वयं को खुश / राजी करना है**
  - **पहले स्वयं को सम्भालना है**

➳_ ➳ **जहा बाप समाया हुआ होगा**

→ **वहा कोई बात, कोई व्यक्ति आ ही नहीं सकता है**

- **कोई वैभव नहीं आ सकता है**
  - **कोई वस्तु भी नहीं आ सकती है**